

मैथिली / MAITHILI
पेपर II / Paper II
साहित्य / LITERATURE

निर्धारित समय : तीन घंटे

Time Allowed : **Three Hours**

अधिकतम अंक : **250**

Maximum Marks : **250**

प्रश्न-पत्र स्पष्ट निर्देश

प्रश्नक उत्तर लिखबासँ पूर्व कृपया निम्नलिखित निर्देशकेँ सावधानीपूर्वक पढ़ि लिअ :

एतय दू खण्ड (SECTION) मे विभक्त कुल आठ प्रश्न अछि ।

अभ्यर्थी कुल पाँच प्रश्नक उत्तर देथि ।

प्रश्न संख्या 1 तथा प्रश्न संख्या 5 अनिवार्य अछि । शेष प्रश्नमेसँ कोनो तीन प्रश्नक उत्तर लिखू, जाहिमे प्रत्येक खण्ड (SECTION) सँ कमसँ कम एक प्रश्नक चयन आवश्यक अछि ।

प्रश्न/खण्डक निर्धारित अंक ओकरा समक्ष निर्दिष्ट कयल गेल अछि ।

उत्तर मैथिली (देवनागरी लिपि) मे लिखब अनिवार्य अछि ।

जतय निर्दिष्ट हो, शब्द-सीमाक अनुपालन अपेक्षित अछि ।

उत्तरित प्रश्नक गणना क्रमानुसार कयल जायत । यदि काटल नहि गेल हो तँ अंशतः लिखित उत्तरक गणना सेहो कयल जायत । प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिकाक कोनो रिक्त पृष्ठ अथवा कोनो पृष्ठक रिक्त भागकेँ अवश्य काटि दी ।

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions :

There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS**.

Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.

Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.

The number of marks carried by a question /part is indicated against it.

Answers must be written in **MAITHILI** (Devanagari script).

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

SECTION A

Q1. प्रत्येक प्रश्न अनिवार्य अछि । काव्य-वैशिष्ट्यकें निर्दिष्ट करैत निम्नलिखित अवतरणक सप्रसंग व्याख्या करू, जाहिमे भाव स्पष्ट रहय । (उत्तर अधिकतम 150 शब्दमे दातव्य) 10×5=50

(a) कबरी भये चामरी गिरि कन्दरे
मुख भये चान्द अकासे ।
हरिनि नयन भये स्वर भये कोकिल
गति-भये गज वनवासे ॥

10

(b) चिन्हारे अहाँ छी विरञ्चि-प्रपौत्रे,
कुक्कर्मि अहाँ छी करै छी की श्रौत्रे ।
गिरीशार्च्यना छोडि ई की करै छी,
परस्त्री अहाँ छद्म सौँ की हरै छी ॥

10

(c) अगड़ाही लगौ बरू बज्र खसौ
एहेन जाति पर बरू धसना धसौ
भूकम्प हौक बरू फटौ धरती
माँ मिथिला रहिये के की करती !

10

(d) की छल से दिन जखन स्वयंवर बीच
नृप-दल प्राणपणे चेष्टल,
कए पूर्ण पूज्य पितागण, जीतब राजकुमारि,
किन्तु अशक्त हताश जखन सभ भेल,
जखन पिता भए आतुर कहल
“यथार्थ भेल बीर बिनु मही,
रहती मम पुत्रि अपरिणीत की ?”

10

(e) नयन-कमल पर युगल भुजगवर काजर गरल उगारि,
मदन-धन्वन्तरि आपे जबे आओब से विष तबहु न सारि ।

10

- Q2.** (a) नारी सौन्दर्यक जे चित्रण विद्यापति पदावलीमे भेटैत अछि से अन्यत्र दुर्लभ — ‘विद्यापति गीतशती’क पठित अंशक आधार पर एहि उक्तिक विश्लेषण करू । 20
- (b) ‘मिथिला भाषा रामायण’ भक्ति काव्य ओ मिथिलाक जातीय गरिमाक समवेत रूपेण प्रतिनिधि ग्रंथ थिक — विवेचन करू । 15
- (c) वर्णन विस्तारक हेतु सूक्ष्म दृष्टि एवं प्राञ्जल वचो – विन्यासक दृष्टिँ ‘कीचक वध’ सफल महाकाव्य थिक — विश्लेषण करू । 15
- Q3.** (a) गोविन्ददासक काव्य नारिकेल फलक सदृश होइतहुँ श्रुति माधुर्यसँ परिपूर्ण अछि — ‘गोविन्ददास भजनावली’क पठित अंशक आधार पर एहि उक्तिक विश्लेषण करू । 20
- (b) ‘कृष्णजन्म’क कथानकमे मैथिल संस्कृतिक छाप झलकैत अछि — सोदाहरण विवेचन करू । 15
- (c) ‘यात्री’जी मैथिली काव्यधाराकेँ नवीनोन्मुख करबाक आयास, संवेदनात्मक एवं व्यंग्यात्मक रूपेँ ‘चित्रा’ मे कयने छथि — विवेचन करू । 15
- Q4.** (a) ‘मिथिला-भाषा रामायण’ एवं ‘रमेश्वर चरित मिथिला रामायण’ मे भिन्नताकेँ दर्शाबैत, ‘रमेश्वर चरित मिथिला रामायण’क विशेषताक उल्लेख करू । 20
- (b) ‘समकालीन मैथिली कविता’ मे संकलित रचनाक आधार पर ‘आरसी प्रसाद सिंह’क व्यक्तित्व ओ काव्य-वैशिष्ट्यक उल्लेख करू । 15
- (c) ‘दत्त-वती’ महाकाव्यमे दार्शनिकता ओ आध्यात्मिकताक काव्यात्मक अभिव्यक्ति भेल अछि — पठित अंशक आधार पर स्पष्ट करू । 15

SECTION B

Q5. निम्नलिखित अवतरणक सप्रसंग व्याख्या करू, जाहिमे भाव स्पष्ट रहय । (उत्तर अधिकतम 150 शब्दमे दातव्य)

10×5=50

- (a) कुमुद कुन्द कदम्ब कास भास,
कैलास कर्पूर पीयूषक कानि प्रसारीसन ।
क्षीर समुद्रक दक्षिणानिले चालल तरङ्ग
सनक लहरी अइसन ! 10
- (b) हमरा लेखें तँ आब अही' देवता छी । लिय' भेल बहुत काल मान रखलहुँ । एहन तँ ककरो
'वर' नहि छैक । लेल जाओ देवता महाराज, लेल जाओ नैवेद्य उपस्थित अछि । 10
- (c) असली पंडित विद्याक अन्वेषणमे रहैत छथि, नकली पंडित विदाइक अन्वेषणमे, असली
पंडित ज्ञानक विस्तार करैत छथि, नकली पंडित धोधिक विस्तार । असली पंडित मूर्खताक
संहार करैत अछि, नकली पंडित मधुरक संहार । 10
- (d) जे स्वयं भ्रष्ट अछि, जे स्वयं लुझबा आ लुटबामे व्यस्त अछि, जे स्वयं प्रतिभा आ मेधाक
छाती पर सवार भड कड ताण्डव कड रहल अछि सैह अनका भ्रष्ट, चोर निरधिन कहैए । ...
कहैए जे तौं अधलाह छें, अधलाह काज कड रहल छें । चरित्रहीन चरित्रवानकेँ अयोग्यताक
चुनौती देने अछि आ हमरा सन लोक एही चुनौतीक तरमे दबाकड किकिया रहल अछि । 10
- (e) तौं हमर सींथ छुबितह तेहन भाग हमर नै छह । तौं देवता छह हमर । मगर ई गहना पहिरबाक
हमर भाग नै अछि अइ जन्ममे । ओ गहना पहिरब त' हम मरि जायब । 10

- Q6.** (a) 'खट्टरककाक तरंग' चमकैत दू धारी तरूआरि अछि । एक मारक धार आ दोसर सम्हारक
धार । एहि तरूआरिक प्रथम धार सँ समाजमे प्रचलित रूढ़िवादी व्यवहार तथा क्रिया-कलापक
दिग्दर्शन कराओल गेल अछि आ दोसर धार ओहिमे निहित अधलाह पक्षकमार्जन
करैछ — एहि उक्ति पर विचार करू । 20
- (b) भाषाकोषक रूपमे काव्योपयोगी ग्रन्थ होइतहुँ 'वर्णरत्नाकर'मे स्थान-स्थान पर कविशेखराचार्यक
कवि-हृदय अभिव्यक्त भइए गेल अछि — पठित अंशक आधार पर एकरा पल्लवित करू । 15
- (c) 'झगड़ा' दम्पती मध्य एकटा एहन झगड़ाक कथा अछि जे अपन मर्मस्पर्शितामे बेजोड़
अछि — स्पष्ट करू । 15

- Q7.** (a) 'पृथ्वीपुत्र'क कथानकमे गति अछि, कथहिसँ चरित्रक चारूता चित्रित अछि, कथामे औत्सुक्य अछि जे क्रमशः बढ़ल अछि ओ कतहु क्षीण नहि होअ । पओलक अछि — सयुक्ति विवेचन करू । 20
- (b) उपन्यास तत्त्वक निकष पर 'लोरिक विजय' उपन्यासक मूल्यांकन करू । 15
- (c) 'राजकमल'क मैथिली कथाक शब्द-शब्दमे नवीनता ओ प्रयोगधर्मिताक अद्भुत सामंजस्य अछि, जेहने भाव-वस्तुमे, तेहने अभिव्यक्ति शैलीमे — 'कृतिराजकमलक' आधार पर एहि उक्तिक समीक्षा करू । 15
- Q8.** (a) 'भफाइत चाहक जिनगी' मे नाटककार शिक्षित-बेरोजगार युवकक माध्यमे समाजमे व्याप्त जीवनक समस्या एवं संघर्षक संग परिस्थितिक अनुसार अपनोकै अनुकूल बना सकए, तकर बुद्धिवादी सामंजस्य प्रस्तुत कएलनि अछि — एहि कथनक समीक्षा करू । 20
- (b) 'लोरिक विजय' सामाजिक संघर्षक अभिलेख थिक । — एहि उक्तिक सार्थकता सिद्ध करू । 15
- (c) मिथिलाक मध्यवर्गीय अभिजात्य वर्गक छद्म विद्रूपक चित्रण 'राजकमलक' कथाक मूल तत्त्व कहले जाइत अछि — समीक्षा करू । 15

